4427

ओ३म्

सन्ध्या-भजन

जिस को

श्री मुन्शी केवलकृष्ण जी पूर्वप्रधान
आर्यसमाज गुजरांवाला ने उर्दू
नज़्म में निर्माण किया

उसी को

दा० लालिग्राम जी ठेकेदार ने हिन्दीभाषा
में प्रकाशित किया

और

पं० शंकरदत्तशर्मा ने अपने

"शर्मा मैशीन प्रिंटिंग प्रेस" मुरादाबाद में छापा।

प्रथमवार १०००० | सं० १९७० वि० | मूल्य)॥ सैकड़ा २)

ओ३म्

दन्तमंजन

यह मंजन मसूड़ों और दांतों के दर्द को दूर और साफ़ करता है। जो साहिब दांतों को उखड़वा डालते हैं उनको इसके सेवन से यह दिक्कत भी न करनी पड़ेगी और मुख की दुर्गन्धि को भी दूर करता है। मूल्य

... होगा।

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर ....
पु. परिग्रहण क्रमांक 53,911

...ी ठेकेदार

चौमुखापुल

मुरादा...

ओ३म्

सन्ध्या मंजूम।

आचमन का मन्त्र ॥

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ यजु० अ० ३६। मं० १२

यह मुक़द्दम ओम् है परमात्मा का ख़ास नाम।
बरकते इसमें भरीं परमात्मा की हैं तमाम ॥ १ ॥
सब जगत का जो है प्रकाशक वह है प्रकाशरूप।
ज़र्रा ज़र्रा में व्यापक सब का रक्षक है अनूप ॥ २ ॥
इष्ट सुख की प्राप्ति हो ऐसी वह कृपा करे।
चारों जानिब से सदा आनन्द की वर्षा करे ॥ ३ ॥

इन्द्रियस्पर्श ॥

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशो बलम्। ओं करतलकरपृष्ठे ॥

इस का अर्थः—

हे कृपामय ! वाक चक्षु कण्ठ हृदय नाक कान ।
दोनों बाज़ू हाथ का व पुख़्त और पांचों प्राण ॥ ४ ॥
ताक़तें जितनी हैं उनको सुर्ख़रूई दीजिये ॥
नेक कामों में तवाना हो यह कृपा कीजिये ॥ ५ ॥

ईश्वरप्रार्थना सहित मार्जनमन्त्र ॥

ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये । ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥ का अर्थ :—

आप हैं प्राणों से प्यारे आप से है प्रार्थना ।
पाक रखिये शिर को मेरे हर तरह परमात्मा ॥ ६ ॥
जिस से होवें शुद्ध सब सङ्कल्प मेरे हर घड़ी ।
रक्खे सब दुःखों से मुझ को आपकी कृपा बड़ी ॥ ७ ॥
आप अपने भक्तों को रखते हो सुख ही में सदा ।
रखिये पाकीज़ा मेरी आंखों को हर सुब हो मसा ॥ ८ ॥
नेकियां हों रात दिन चारों तरफ़ पेशे नज़र ।

हो मेरी आंखों से हर दम यह नजारा दूर तर ॥ ९ ॥
आप ही के है नियम से ठीक यह जिसमी निजाम।
पाक मेरे कण्ठ को रखिये सदा हर सुबह शाम ॥ १० ॥
जिससे प्रिय वाक का निश दिन मैं उच्चारण करूं।
झूंठ से रहकर अलहदा सत्य ही वर्णन करूं ॥ ११ ॥
आप ही हैं पूज्य सब के इस जगत में और महान्।
पाक रखिये मेरा हृदय होके मुझ पर मेहरबान ॥ १२ ॥
क्योंकि दर्शन आप का इस में ही होता है सदा।
जिस के ज़रिये मिलता है आनन्द सबको मोक्ष का ॥ १३ ॥
जितने हैं ब्रह्माण्ड सब को आप ही ने है रचा।
रखिये पाकीज़ा मेरी नाभी को ऐ ! परमात्मा ॥ १४ ॥
कुण्ड अमृत का बनाओ अपनी कृपा से इसे।
ताकते पूरी दिलाओ अपनी कृपा से इसे ॥ १५ ॥
आपही विज्ञानमय दुष्टों को देते दण्ड हो।
वेद मारग पर चलाओ हर दो मेरे पांव को ॥ १६ ॥
यानो अब हम सब तरह से नेक रस्ते पर चलें।
जितने हैं दुःख दर्द सारे अपने ऊपर से टलें ॥ १७ ॥
आप अविनाशी हैं लेकर आपही का आशरा।
फिर दुबारा शिर की शुद्धि आप से हूं मांगता ॥ १८ ॥
जिस से हर दम हर घड़ी हों नेक मेरे सब ख़याल।
जो करें हर एक बराई को हमेशा पायमाल ॥ १९ ॥

मिस्ल आकाश आप व्यापक सारे है संसार में।
हर तरह से पाक रखिये हम को हर व्यवहार में ॥ २० ॥

प्राणायाम का मन्त्र।

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः।
ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम् ॥

तै० प्र० १० अनु० २७ का अर्थः—

भूः—आप हैं ऐ! ओम् भक्तों को प्यारे प्राण से।
मोक्ष सुख मिलता है केवल आप ही के ज्ञान से ॥ २१ ॥

भुवः—अपने भक्तों के लिये ऐ! ओम् सुखदाता हैं आप।
सबको धारण कर रहे सबके पिता माता हैं आप। २२।

स्वः—सब जगतके ठहरने का आप ही स्थान हैं।
घट घट अन्दर व्यापक हैं और प्राणके भी प्राणहैं। २३।

महः—सब बड़ों से भी बड़े हैं इस जगत में आप ही।
हर बशर को पूजने के योग्य बस हैं आप ही ॥ २४ ॥

जनः—आपने ऐ! ओम् यह संसार सारा है रचा।
आप की महिमा का गायन सब जगत है गा रहा ॥ २५ ।

तपः—है फ़क़त बस ज्ञान और प्रकाश ही रूप आप का।
आप देते दण्ड हो दुष्टों को जन के पाप का ॥ २६ ॥

सत्यम्—आप अविनाशी सदा से एक रस हैं और अमर।
काल का होता नहीं है आप पर मुतलक़ असर ॥ २७ ॥

प्रार्थना ॥

आप का ऐ ! ओम् मन में ध्यान हम हर दम करें।
मन की यकसुई से हासिल टीक हम दम शम करें ॥२८॥

अघमर्षण के मन्त्र ॥

ओं ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥ सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ॥ ३॥

ऋ० अ० ८। अ० । व० ४८ ॥ मं० का अर्थः—

आपही ने विश्वस्वामी पहिली सृष्टि के समान।
ज्ञानमय सामर्थ्य से सब कुछ किया प्रकाशमान ॥ २९ ॥
वेद हैं भण्डार जो विद्याओं के गिन्ती में चार।
आप ही के ज्ञान से वह सब हुये हैं आशकार ॥ ३० ॥
प्रलेकी तारीकी को कहते हैं जो लैलुल अज़ीम।
उसमें यह प्रकृति शक्ले सोज़म में थी मुक़ीम ॥ ३१ ॥

सत, रज, तम, तीनों गुण प्रकृति से ज़ाहिर हुये।
उनके प्रमाणु समुनद्र रूप आकाशी बने ॥ ३२ ॥
रात दिन और माहो संवत् उसके हिस्सा पल घड़ी।
सबने पकड़ी आपकी सामर्थ्य से सूरत गरी ॥ ३३ ॥
चन्द्र, सूर्य, अग्नि, वायु, और जलादि पृथिवी।
पेशो पस तरतीब से इन सबकी पैदायश हुई ॥ ३४ ॥
आपकी तहिरीक से सब कुछ ग़रज़ पैदा हुआ।
आप धारण सबको करके वश में रखते हैं सदा ॥ ३५ ॥
जीवों ने भी जन्म पाया अपने कर्मों के सबब।
पाये हैं ऐमाल से क़ालिब बुरे अच्छे यह सब ॥ ३६ ॥
इससे यह लाज़िम हुआ हम पाप कर्मों से बचें।
ता रहें दुःख से अलग आनन्द के भागी बनें ॥ ३७ ॥

मन से परिक्रमा के मंत्र॥

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिता-दित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥ १ ॥ अथर्व कां० ३ अ० ६। व० २७ मंत्र १ ॥

इस का अर्थः—

अग्नि है पूर्व दिशा का जो पती परमात्मा ।
पाते हैं रक्षा को उससे भक्त जन धर्मात्मा ॥ ३८ ॥
ज्ञान और प्रकाश ही रखता है अपना वह स्वरूप ।
बन्धनों से रहित है वह एक लासानी अनूप ॥ ३९ ॥
बाण हैं उसके यह सब सूर्य्य की कृणों बेशुमार ।
रक्षा के करने का यह देती हैं सब अंजामकार ॥४०॥
है नमस्कार उसको और उसके गुणों को बार बार ।
बाद उसके प्रार्थना करता हूं वह बा इनकिसार ॥ ४१ ॥

जो बशर रखते हैं हमसे द्वेष इस संसार में ।
रुव्वाह हमको द्वेष है उनसे किसी व्यवहार में ॥ ४२ ॥
इस बुराई को हमारी नाश कृपा से करें ।
ता रहे आपस में प्रीती खोटे कर्मों से बचें ॥ ४३ ॥

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजीरक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ २ ॥

अथर्व० कां० ३ अ०८। व० २७ मं० २

इस का अर्थः—

जानिबे दक्षिण का भी वोही पती है इन्द्र नाम ।

करता है जहरीले जांदारों से जो रक्षा मुदाम ॥ ४४ ॥
ज्ञानी हैं जो लोग वह बाणों की उस के हैं समान
करते हैं रक्षा सदा हो करके मन से मेहरबान ॥ ४५ ॥
है नमस्कार उस को और उस के गुणों को बार बार ।
बाद उस के प्रार्थना करता हूं यह बा इनकिसार । ४६ ।
जो बशर रखते हैं हम से द्वेष इस संसार में ।
ख्वाह हम को द्वेष है उन से किसी व्यवहार में ॥ ४७ ॥
इस बुराई को हमारी नाश कृपा से करें ।
तां रहे आपस में प्रीति खोटे कर्मों से बचें ॥ ४८ ॥

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिता-न्नमिषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्योनमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ ३ ॥ अथर्व कां० ३ अ० ६ । वर्ग २७ मं० ३

इस का अर्थः—

तीसरी पश्चिम दिशा का वरुण स्वामी बरतरीं ।
जि की उत्तमताई की उपमा कहीं मिलती नहीं ॥४६॥
सर्प आदि अजदहाओं से जो करे रक्षा सदा ।
अन्न आदि चीज है सब बाण जिसके बरमला ॥५०॥
है नमस्कार उसको और उसके गुणों को बार बार ।

बाद उसके प्रार्थना करता हूं यह बा इनकिसार ॥ ५१ ॥
जो बशर रखते हैं हमसे द्वेष इस संसार में ।
ख्वाह हमको द्वेष है उनसे किसी विवहार में ॥५२॥
इस बुराई को हमारी नाश कृपा से करें ।
ता रहे आयुस में प्रीती खोटे कर्मों से बचें ॥ ५३॥

ओं उदीचीदिक्सोमोऽधिपतिः स्वजोरक्षिताऽशनि-
रिषवस्तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ ४ ॥

अथर्व० कां० अ० ६ । वर्ग २७ मं० ४

इस का अर्थः—

जानिबे उत्तर का वो ही स्वामी रखता सोम नाम ।
शान्ति आदि शुभ गुणों से सुख वह देता है मुदाम ॥५४॥
बिजली आदि अपने बाणों से वह रक्षा करता है ।
देता है आनन्द वह और सुख की वर्षा करता है ॥५५॥
है नमस्कार उसको और उसके गुणों को बार बार ।
बाद उसके प्रार्थना करता हूं यह बा इनकिसार ॥५६॥
जो बशर रखते हैं हमसे द्वेष इस संसार में ।
ख्वाह हमको द्वेष है उनसे किसी व्यवहार में ॥५७॥
इस बुराई को हमारी नाश कृपा से करें ।

ता रहे आपुस में प्रीतो खोटे कर्मों से बचें ॥५८॥

ओं ध्रुवादिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्योनमोरक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥
अथर्व०कां०३अ०६ । वर्ग२७ मं०५ ॥

आनिबे पाईं भी वह विष्णु ही है सबका पती ।
उसकी व्यापकता से खाली शय नहीं है कोई भी ॥५६॥
हैं दरख़्त आदि यह जितने उसके हैं यह बाण सब ।
जिनसे रक्षा करता है वह हर घड़ी हर रोज़ो शब ॥६०॥
है नमस्कार उसको और उसके गुणों को बार बार ।
बाद उसके प्रार्थना करता हूं यह बा इनकिसार॥६१॥
जो बशर रखते हैं हमसे द्वेष इस संसार में ।
ख्वाह हमको द्वेष है उनसे किसो विवहार में ॥६२॥
इस बुराई को हमारी नाश कृपा से करें ।
ता रहे आपुस में प्रीतो खोटे कर्मों से बचें ॥६३॥

ओं ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रोरक्षिता वर्षमिषवस्तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्योनमो रक्षितृभ्यो

नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥ अथर्व० कां० ३ अ० ६ वर्ग २७ मं० ६ ॥

जानिबे वाला का है बृहस्पति पति सबसे महान ।
वाणी का स्वामी है जो है सब जगह प्रकाशमान ॥६४॥
बारिशे धारां के क़तरे बाण हैं उसके तमाम ।
उनसे वह रक्षा है करता रात दिन और सुबह शाम ॥६५॥
है नमस्कार उसको और उसके गुणों को बार बार ।
बाद उसके प्रार्थना करता हूं यह बा इनकिसार ॥६६॥
जो बशर रखते हैं हमसे द्वेष इस संसार में ।
ख़्वाह हमको द्वेष है उनसे किसी व्यवहार में ॥६७॥
इस बुराई को हमारी नाश कृपा से करें ।
ता रहे आपुस में प्रीती खोटे कर्मों से बचें ॥६८॥

उपस्थान के मंत्र ॥

ओं उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥ यजु० अ० ३५ । मं० १४

ऐ ! हर एक वस्तु में व्यापक हर जगह प्रकाशमान ।

जो चराचर है जगत् उसकी हैं निश्चय आप जान ॥६९॥
जो मुनवर हैं उन्होंने आप से पाया है नूर ।
आप हैं दिन रात रोशन है अंधेरा दूर दूर ॥ ७० ॥
आप हैं उत्तम सबों से एक रस और लाज़वाल ।
आप के नज़दीक तक आने नहीं पाता है काल ॥ ७१ ॥
शरण हैं हम आप की कृपादृष्टि कीजिये ।
अपनी रक्षा के अहाते में हमें अब लीजिये ॥ ७२ ॥

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥२॥यजु०अ०३३मं०३१॥

वेदों का ज़ाहिर कुनिन्दा विश्व उत्पादक है जो ।
खुद भी है प्रकाशरूप और सब का प्रकाशक है जो ॥७३॥
विश्व की रचना के गुण और वेद की सब श्रुतियाँ ।
कर रही हैं हर जगह पर जिसकी महिमा को बयाँ ॥७४॥
विश्व विद्या प्राप्ती को हम उस का हम करते हैं ध्यान ।
वह करे कृपा दृष्टि होके हम पर मिहरबान ॥ ७५ ॥

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चस्वाहा ॥३॥ यजु० अ०७मं०४२॥

रूप अद्भुत जिसका है चेतन और जड़की है जान ।

जो है विद्वानों के हृदय में सदा प्रकाशमान ॥ ७६ ॥
पृथिवी आकाश आदि जिसने हैं यह सब रचे।
चन्द्र सूर्य्य लोक सारे जिसने सब पैदा किये ॥ ७७ ॥
दुःखों के जो दूर करने को बड़ा भारी है बल ।
धारण और रक्षण को जिसके हैं नियम सारे अटल ॥७८॥
रच के हर ब्रह्माण्ड को जो खुद है धारण कर रहा।
वह हमारे हृदयों में होवे प्रकाशित सदा ॥ ७९ ॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ ४ ॥

यजु० अ० ३६ मं० २४ ॥ का अर्थः—

सब जगत जिसने रचा जो शुद्ध है विज्ञानरूप।
धार्मिक पुरुषों का जो हितकारी है सब से अनूप ॥८०॥
पहिले था और अब भी है कायम रहैगा जो मुदाम।
जिस की निगरानी के अन्दर रहतीहै खलकत तमाम ॥८१॥
सौ बरस हम उसको देखें ज़ीस्त पावें सौ बरस।
हम सुने उपदेश उसका और सुनावें सौ बरस ॥८२॥
इससे ज्यादा भी जियें देखें सुनावें और सुनें।
दीनता से दूर रहकर मस्तहृद हर दम रहें ॥८३॥

गुरुमंत्र गायत्री ॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु० अ०३६ मं० ३ ॥

इस का अर्थः—

यह मुकद्दम ओम् है परमात्मा का खास नाम।
बरकतें इसमें भरीं परमात्मा की हैं तमाम ॥८४॥
इसके तीनों हर्फ से हैं सैकड़ों मानी अयां।
देते हर पहिलू से हैं परमात्मा का जो निशां ॥८५॥
इस लिये पहिले इसे सब लिखते हैं तहरीर में।
करते उच्चारण हैं अव्वल इसका हर तकरीर में ॥८६॥
बस इसी दस्तूर से यंहां पर भी यह आया है ओम्।
साथ अपने बरकतें सब के लिये लाया है ओम् ॥८७॥
आप हैं ऐ ओम्! भक्तों को प्यारे प्राण से।
मोक्ष सुख मिलता है केवल आप ही के ज्ञान से ॥८८॥
अपने भक्तों के लिये ऐ ओम! सुखदाता हैं आप।
सब को धारण कर रहे सब के पिता माता हैं आप।
सब जगत के ठहिरने का आप ही स्थान हैं।
घट घट अन्दर व्यापक हैं और प्राण के भी प्राण हैं ॥९०॥
जो जगत रचता है और ऐश्वर्य्य का देता है दान।

योग्य है जो ग्रहण करने के सिद्धान्त ज्ञानवान ॥९१॥
शुद्ध है विज्ञानमय है सब का प्रकाशक है वह।
सब सुखों का दाता है अज्ञान का नाशक है वह ॥९२॥
उसकी भक्ति को हम अपने हृदय में धारण करें।
प्रेम से उसके गुणों का रात दिन गायन करें ॥९३॥
आओ हम उसका होवें उससे यह विनती करें।
कर्म शुभ करने की तौफिकें इनायत हो हमें ॥९४॥
बुद्धि होवे तीव्र अपनी कुन्द ज़हिनी दूर हो।
हृदय अपना रोशनी से ज्ञान की पुर नूर हो ॥९५॥

समर्पण

सत्त चित आनन्दमय हैं आप हे परमात्मन।
आप को अर्पण है सब शुभ कर्म तन मन और धन ॥९६॥
धर्म, अर्थ और काम होवें सिद्ध हम को सब के सब।
मोक्ष का भागी भी हमको कीजिये कृपा से अब ॥९७॥

नमस्कार का मंत्र ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥
यजु० अ० १६। मं०४१ ॥

इस का अर्थ :—

हे ! जगत स्वामी पिता हैं और मंगलमय अनूप ।
हर तरह कल्याणकर्ता मुक्तिदाता सुखस्वरूप ॥ ६८ ॥
आप का स्मरन करूं मैं दीन हो कर बार बार ।
है नमस्कार आप को मेरा बराबर बार बार ॥ ९९ ॥

खातमा

आप की कृपा से भगवन इसने पाया इख्तताम ।
शुक्रिया करता है केवल दिल से बा इज्जे तमाम ॥१००॥
आगे भी कृपा दृष्टि आपकी होवे मुदाम ।
जिससे यह मंजूम कुतबा हो पसन्दे खासो आम ॥१०१॥

—:☉*☉:—

पं० रामजीमल जो मेनेजर गुरुकुल सूर्य्यकुण्ड बदायूं की

कविता

फायलातुन फायलातुन फायलुन ।
फायलातुन फायलातुन फायलुन ॥
जिन्दगी इन्सां को है क्या मौत क्या ।
एक पर उपकारी ने ऐसा लिखा ॥ १ ॥
ब्रह्म की भक्ति है प्यारो ! जिन्दगी ।
माद्दे की है निशानी मौत की ॥२॥

विद्या जीवन है अविद्या है मरन।
रास्ती जीवन नहीं जाये सखुन ॥ ३ ॥
झूंठ है बस मौत जीवन धर्म्म है।
मौत है जो उस से उलटा कर्म्म है ॥ ४ ॥
है जो पर उपकार जीवन है वही।
और खुद ग़रज़ी निशानी मौत की ॥ ५ ॥
मौत आलस ज़िन्दगी पुरुषार्थ है।
ब्रह्मचर्य्य रहबरे परमार्थ है ॥ ६ ॥
मौत है जो उस की ज़िद् की बात है।
सादगी जीवन बनावट घात है ॥ ७ ॥
एकता जीवन है बेशक और फूट।
ज़िन्दगी आज़ादी इस में है न झूंठ ॥ ८ ॥
मौत है परतंत्रता वे शुभा शंक ॥
बीरता है ज़िन्दगानी बेधड़क ॥ ९ ॥
बुज़ दिली है मौत सतसंग ज़िन्दगी।
और कुसंगत मौत का है एलची ॥ १० ॥
ज़िन्दगी संतोष मृत्यु लोभ जान।
मौत हिंसा ज़िन्दगी रक्षा के मान ॥ ११ ॥
ज़िन्दगानी कृतज्ञता है दोस्तो।
मौत है कृतघ्नता मुझ से सुनो ॥ १२ ॥
ज़िन्दगी चाहे तो साधन मौत के।
छोड़ दे कहना नमक का मान ले ॥ १३ ॥

धर्म क दश लक्षण ।

सदा धर्म करते रहो, जबतक घट में प्राण ।
धर्म्मशास्त्र में दश लिखे, उस के खास निशान ॥

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म्मलक्षणम् ॥ मनु ॥

भजन ॥

टेक—धर्म्म के दश निशां असली मनू हम को बताता है ।
करें धैर्य को सब धारन प्रथम हम को जताता है ॥ १ ॥
क्षमा है दूसरा लक्षण अगर तकसीर हो जाये ।
वह बेहुदा है जो एबज. में औरों को सताता है ॥ २ ॥
बड़ा मुशकिल है तीजा धर्म मन का रोकना भाई ।
यही मन दुनयवी लज्जत में इन्सां को फंसाता है ।
चहाराम छोड़ो चोरी को भरो मेहनत से पेट अपना ।
कमीना वह है जो औरों की दौलत छीन खाता है ॥ ४ ॥
रुहानी और जिस्मानी सफ़ाई की हैं दो किस्में ।
यही शुद्धि का लक्षण है पांचवां हम को बताता है ॥ ५ ॥
छठें हैं इन्द्री निग्रह करे क़ाबू में जो इन को ।
ऋषि मुनियों की पदवी को वह सज्जन पुरुष पाता है ॥ ६ ॥
विचार है सातवां नम्बर परीक्षा जिस से करते हैं ।
यही लक्षण हमारे दिल से गप्पों को हटाता है ॥ ७ ॥

है उत्तम धर्म पढना वेदविद्या सब मनुष्यों का।
यही बस नियम अष्टम हमारा ईश्वर से मिलाता है। ८।
नवें कर सत्य को धारण सब दुख से अलहदा हो।
यही मुक्ति का सीधा रास्ता हम को दिखाता है॥ ९॥
ऐ "शर्मा" आओ सब मिलकर त्यागें क्रोध दशवें को।
वही पालन कराएगा कि वो सब का विधाता है॥ १०॥

—※※—

टेक—मुझे भावे नाम ओंकार है। सर्वोत्तम जगदीश्वर का॥

लावनी

ईश्वर के सर्व नामों का बोध दाता है।
तुम करो अर्थ सब लक्षण बतलाता है॥
जो प्रेमभाव से पुरुष ओम् गाता है।
वह सब दुःखों से छूट मुक्ति पाता है॥

छन्द

जन योगी मन में धारें, ज्ञानी नर अर्थ विचारें।
बिन ओम् कितिक सरमारें, जग जन्म अकारथ डारें॥

(तुक)

यह कैसा सुन्दर नाम, सुखों का धाम, मिले विश्राम।
कहे सो करके दिल में विचार है, रहे खौफ न भवसागर का॥१॥ मुझे भावे नाम०।

(लावनी)

ऋषि मुनियों ने इस नाम से मुक्ति पाई।
मिले अर्थ धर्म और काम मोक्षपद भाई॥
मैं कहूं कहां तक ओम् नाम प्रभुताई।
तुम वेद शास्त्र में देखो इस की बड़ाई॥

(छन्द)

सतपुरुषों ने चित्त लगाया, इस प्रेमाक्षर को पाया।
आनन्द मुक्तिपद पाया, सब तज कर झूंठी माया॥

(तुक)

जन सज्जन करें विचार, है प्रथम अकार, द्वितीय उकार
तीसरा अक्षर मिला मकार है, सुनो अर्थ तीनों अक्षर का॥
॥ २ ॥ मुझे भावे०।

(लावनी)

वैराट बोध प्रथमाक्षर से आता है।
सब ब्रह्माण्डों में प्रकाश फैलाता है॥
है तैजस ज्ञानस्वरूप बुद्धिदाता है।
सब में व्यापक परिपूर्ण वह कहलाता है॥

(छन्द)

वह ऐसा है जगदीश्वर, है सब जग उसके भीतर
नहीं रहता धाम बना कर, है अजर अमर सर्वोपर॥

(तुक)

वह अटल और अखण्ड, व्यापी ब्रह्मण्ड, सब से प्रचण्ड, अर्थ दे इतने एक अकार है। भ्रम खोवे दिल अन्दर का ॥ ३ ॥ मुझे भावे० ॥

(लावनी)

है मिला दूसरा इस में उकार मनोहर।
दे हिरण्यगर्भ का अर्थ समुझ ज्ञानी नर ॥
हैं जितने प्रकाशक तारा चंद्र दिवाकर।
सब उस के गर्भ में करते वास निरंतर ॥

(छन्द)

उसने सूर्यादि बनाया, सब लोक त्रिलोक रचाया।
करके जाहिर दिखलाया, है कैसी अद्भुत माया ॥

(तुक)

वह सब में करे प्रकाश, रहे नित पास, करो विश्वास, अर्थ। कहे सुन्दर वर्ण उकार है, है स्वामी सचराचर का ॥४॥ मुझे भ०

(लावनी)

अब सुनो मकार का अर्थ प्रेम चितलाई।
है सब का स्वामी आनन्दित वह न्याई ॥

उन अद्भुत तौर से सारी सृष्टि बनाई ।
वह ज्ञान स्वरूप अनादि भक्तसुखदाई ॥

[छन्द]

अँधेरा क्या उजियारा, वह सब में देखन हारा ।
है सब जग का आधारा, बस उसी का लेओ सहारा ॥

(तुक)

अब 'जगन' कहे शिर नाय, सुनो चितलाय, करेगा सहाय,
वही शरणागत—पालन [illegible] ॥
मुझे भावे०॥

सन्दर्भ पुस्तकालय
पुस्तक परिग्रहण संख्या 5527
दयानन्द महिला

इति ॥

एक लड़का रामदास गुम होगया है अरसा दो साल का जो बौरा है यानी कुछ २ बोलसकता है जो कोई लावे २५ इनाम पावेगा हुलिया एस्तकद रङ्ग गन्दुम ? दाग जखम कनपटी दाढ़ीपर ऊपर के दांत बड़े उम्र १३ बरष की है ।

सालिगराम मुहल्ला बिहारीपुर बरेली